आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिनारदस्तथा।
असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे।।
सर्वमेतदृतं मन्ये यन्मां वदसि केशव।
न हि ते भगवन्व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः।।

अर्जुन ने कहा, "प्रभो ! आप परमब्रह्म, परमधाम, पावन परम सत्य और सनातन दिव्य पुरुष हैं। आप ही चिन्मय आदिदेव, अजन्मा और सर्वव्यापी हैं। नारद, असित, देवल, व्यास आदि सारे ऋषि आप का इसी प्रकार गुणगान करते हैं और अब आप स्वयं भी मेरे प्रति इस तत्त्व का वर्णन कर रहे हैं। हे कृष्ण ! आपने जो कुछ भी कहा है, इसे मैं सम्पूर्ण रूप से सत्य मानता हूँ। हे भगवन् ! आपके स्वरूप को न देवता जानते हैं और न दानव ही जानते हैं। (गीता १०।१२-१४)

भगवान् श्रीकृष्ण से भगवद्गीता का श्रवण करके अर्जुन ने उन्हें **परम्ब्रह्म** स्वीकार किया है। जीव ब्रह्म है और श्रीभगवान् परमब्रह्म हैं। **परम्धाम** का अर्थ है कि वे सम्पूर्ण जगत् के परम आश्रय हैं; **पवित्रम्ः** सांसारिक उपाधियों से मुक्त हैं; **पुरषम्ः** सबके परम-भोक्ता हैं; **दिव्यम्ः** लोकोत्तर हैं; **आदिदेवम्ः** स्वयं भगवान् हैं; **अजम्ः** अजन्मा है; **विभुम्ः** सर्वव्यापी परात्पर हैं।

कोई कह सकता है कि अर्जुन ने श्रीकृष्ण से यह सब चाटुकारी के रूप में कहा, क्योंकि वे उसके सखा थे। अतः भगवद्गीता के पाठकों के हृदय से इस संशय को निर्मूल करने के लिये अर्जुन ने इस स्तुति को प्रमाणित करते हुए अगले ही श्लोक में कह दिया कि केवल वह श्रीकृष्ण को स्वयं भगवान् मानता हो—ऐसा नहीं। अपितु, नारद, असित, देवल, व्यासदेव आदि सब प्रामाणिक ऋषियों का भी यही मन्तव्य है। इन महापुरुषों का मत सर्वमान्य है, क्योंकि ये उस वैदिक ज्ञान को प्रसारित करते हैं, जो सब आचार्यों द्वारा सम्मत है। इस आधार पर अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा कि उन्होंने जो कुछ भी कहा है, वह उसे पूर्ण रूप से सत्य मानता है। **सर्वमेतदृतं मन्येः** 'आप जो कुछ भी कहते हैं, मैं उसे सत्य मानता हूँ।' अर्जुन ने यह भी कहा कि श्रीभगवान् का स्वरूप परम दुर्बोध है, बड़े से बड़ा देवता तक उन्हें जानने में समर्थ नहीं है। जब मनुष्य से श्रेष्ठ प्राणी तक उन्हें नहीं जान सकते, फिर वह मनुष्य श्रीकृष्ण को किस प्रकार जान सकेगा, जो उनका भक्त न हो?

भाव यह है कि भगवद्गीता को भक्तिभाव से ही ग्रहण करना है। श्रीकृष्ण को अपने समान अथवा साधारण मनुष्य मानना तो दूर, केवल महापुरुष भी नहीं समझना चाहिए। श्रीकृष्ण साक्षात् भगवान् हैं—भगवद्गीता में आए श्रीभगवान् के वचनों से तथा गीता के जिज्ञासु अर्जुन के वचनों से यह सत्य कम-से-कम सिद्धान्त रूप में तो सिद्ध होता ही है। अतएव हम भी श्रीकृष्ण को सिद्धान्त रूप में तो भगवान् स्वीकार कर ही लें। इस दैन्यभाव से हमें भगवद्गीता का बोध हो जायगा। इसके बिना भगवद्गीता का अध्ययन करने पर भी उसका ज्ञान नहीं हो सकता, क्योंकि यह परम रहस्यमय (मर्म का विषय) है।